ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

संगीत के परिपेक्ष में साहित्य (एक अवलोकन)

Literature In The Context of Music (An Overview)

Paper Submission: 15/01/2020, Date of Acceptance: 26/01/2020, Date of Publication: 27/01/2021

अनुपमा सक्सेना
अध्यक्षा,
सह प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
डी0 ए0 वी0 (पी0जी0)
कॉलेज, देहरादून,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

संगीत एक प्राकृतिक एवं उत्तम कला है। सभी कलाओं में संगीत को सबसे प्राचीन एवं सर्वोपरि माना गया है। भाषा से पूर्व भी संगीत प्रकृति के कण–2 में व्याप्त था। संगीत शब्द के अन्तर्गत गायन, वादन तथा नृत्य इन तीनों कलाओं का समावेश होता है। इन तीनों कलाओं में गायन को प्रथम स्थान पर रखा गया है। संगीत कला को स्वरों का मिश्रण भी कहा जाता है। जब इन स्वरों के साथ साहित्य जोड़ दिया जाता है तो सोने पे सुहागा जैसा प्रतीत होता है। संगीत मानव मन को आकर्षित करने की ही नहीं, वरन् स्वर लहरी के माध्यम से अपने भावों को श्रोता के हृदय में उतारना ही परमात्मा में लीन करने का सर्वोत्कृष्ट माध्यम है। वैदिक काल में साम गायन का प्रचलन था। सामवेद कालीन संगीत पूर्णतः आध्यात्मिक वैदिक मंत्रो के स्वरबद्ध उच्चारण आदि का प्रयोग होता था। हर मंत्र के लिए अलग–अलग लय, छंद, ताल, स्वर आदि हैं। संगीत नाद प्रधान है और साहित्य शब्द प्रधान हैं। संगीत और साहित्य का बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। संगीत लयात्मक है। साहित्य को जब लय में पढ़ा जाता है तो वह संगीत का रूप धारण कर लेता है। संगीत के बिना साहित्य और साहित्य के बिना संगीत अधूरा है। संगीत में जब स्वर के साथ साहित्य का समावेश होता है तब कलाकार किसी भी प्रकार की भावाभिव्यक्ति करके सौन्दर्यानुभूति करा सकता है।

Music is a natural and fine art. Music is considered to be the most ancient and paramount among all art forms. Even before language , music was prevalent in each and every particle in nature. Singing , playing instruments and dancing all three art forms come under music. Musical art is also called a mixture of musical notes. When literature is combined with these musical notes , it seems like icing on the cake . Music is not the only way to attract human mind, but to bring your emotions into the heart of the listener through the tone of the voice, it is the best way to get into the divine. Sama singing was prevalent in the Vedic period . Samaved music was used to accent the utterances of purely spiritual Vedic mantras .There are different rhythms, verses, musical notes, taals, etc. for each mantra. Music is “Naad” pradan and literature is the word pardan. Music and literature have a very close relationship. The music is lyrical. When literature is read in rhythm, it takes the form of music. Literature without music and music without literature is incomplete. When a simple literature verse is said or sung in a musical rhythm, then the artist can make any kind of emotional expression and make him feel beautiful.

मुख्य शब्द : संगीत, साहित्य, वैदिक, लय, छन्द, शब्द, सामवेद, स्वर।
Music, Literature, Vedic, Rhythm, Verses, Words, Samaveda, Vowels.

प्रस्तावना

संगीत की परम्परा अतिप्राचीन एवं विश्व की सारभौमिक वाणी है जो स्वर और लय के माध्यम से समस्त विश्व की आत्मा को एक सूत्र में बांधकर रखने में सक्षम है। भारतीय संगीत का इतिहास हमारे वेदों से प्राप्त है जो संपूर्ण विश्व में अपना सर्वोत्तम स्थान रखते हैं। वैदिक काल का सामगान व शान्तिपाठ अब भी संपूर्ण भारतवर्ष में प्रचलित हैं। जहाँ संगीत है, वहाँ शान्ति का वास है। संगीत एक ऐसी कला है। जो मानव के जन्म से मृत्युपर्यन्त विद्यमान रहती है। जो मानव के हंसने, रोने, गाना–बजाना, नाचना जैसी हर प्रक्रिया के रूप में लय ध्वनि के माध्यम से विद्यमान रहती है। कुछ विद्वानों का मानना है कि उपासना से संगीत का जन्म ओऽम शब्द से हुआ।[1]

संगीत चाहे शास्त्रीय हो या उपशास्त्रीय, बिना साहित्य के संगीत अधूरा है। संगीत को पूर्णतया रूप देने के लिए सिर्फ स्वर काफी नहीं होता, स्वर के साथ–साथ शब्दों का समावेश भी आवश्यक होता है। तभी वह किसी भी संगीत को सफल बनाने या रसानुभूति प्रदान करने में सक्षम है। संगीत और साहित्य दोनों का साथ चोली–दामन जैसा है। दोनों ही मनुष्य के मनोभावों को अभिव्यक्त करने का महत्वपूर्ण माध्यम है। दोनों के संयोग से अलौकिक सौन्दर्य की सृष्टि होती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि मानव ने भाषा से पूर्व अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए अभिनय तथा सकेतों का सहारा लिया था। धीरे–धीरे प्रकृति की तीव्र ध्वनि से शब्दों का निर्माण हुआ। शब्दों को जोड़कर वाक्य बना। वाक्य से भाषा, भाषा से 'साहित्य' का प्रादुर्भाव हुआ। इसी संदर्भ में मतृहरि ने स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया है। –

'साहित्य संगीत कला विहिनः
साक्षात्पशुः पुच्छाविषाणविहिनः
तृणन्न खदन्नपि जीवमान
स्तद्वागधेयं परमं पशुनाम्'[2]

अर्थात् साहित्य, संगीत और कला से विहीन मनुष्य साक्षात् पशु के समान है। ये पंक्तियां साहित्य एवं संगीत में सह अस्तित्व को पूर्ण रूप से स्पष्ट करती है, कि स्वर के बिना शब्द, शब्द के बिना स्वर अपूर्ण है। संगीत एवं साहित्य दोनों का एक उद्देश्य होता है, आनन्द की अनुभूति कराना। संगीत का मुख्य तत्व नाद ब्रह्म और तालबह्म है, उसी प्रकार साहित्य का अक्षर ब्रह्म और शब्द ब्रह्म से साक्षात् दर्शन कराना मुख्य लक्ष्य है। दोनों का मूलतत्व नाद है। जिस प्रकार मूर्त विधान के लिए कविता चित्र–विद्या की प्रणाली का अनुसरण करती है। उसी प्रकार नाद सौष्ठव के लिए वह संगीत का सहारा लेती है।[3]

संगीत और साहित्य दोनों की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती है। गायन, वादन, नृत्य संगीत की इन तीनों विधाओं में गायन का साहित्य से घनिष्ठ सम्बन्ध माना गया है। इन दोनों कलाओं का सम्बन्ध प्राचीन काल से चला आ रहा है। जिसकी पृष्ठभूमि सामवेदीय परम्परा में प्राप्त होती है। प्राचीन काल में पूजा पद्धति में ऋचाओं का गान होता था। ये मंदिरों से उठी कलायें हैं। इस वेदकालीन मंत्रों की छाप भारतीय संगीत के मधुर स्वरों में सृजित हुई। वैदिक काल में सामगायन का प्रचार था। धार्मिक अवसरों, यज्ञ, संस्कारादि में उस समयानुसार संगीत में साहित्य को छन्दोबद्ध गीतों से गायन होता था। संगीत शास्त्र के साहित्य में छन्दों का अटूट सम्बन्ध है। भारतीय संस्कृति के प्रतिनिधि विद्वान साहित्यकार संगीत में प्रकांड विद्वान रहे हैं। उनका यह विश्वास रहा है कि आदिम संगीतज्ञ नटराज की ताल लय समन्वित तांडव से साहित्य व संगीत तत्वों का एक साथ ही सूत्रपात हुआ। आज भी यह परम्परा किसी रूप में विद्यमान हैं। संगीत का आदिम राग भैरव भगवान शिव के अघोर मुख से उत्पन्न हुआ और साहित्य की आदिम वर्णमाला महादेव के पदचाप से उद्भुत हुई, इस प्रकार की परम्परा प्राचीन ग्रंथों में पाई जाती है।[4]

संगीत और साहित्य के विकास में मध्यकालीन संगीतज्ञों एवं कवियों का विशेष योगदान रहा है जिन्होंने अपने उच्च स्तरीय गायन शैली से अपने साहित्य के माध्यम से नवीन आयाम दिये और साहित्य के क्षेत्र में महान संगीतज्ञ अमीर खुसरों का नाम उल्लेखनीय है। खुसरों अरबी, फारसी, तुर्की, और हिन्दी भाषाओं के विद्वान थे। कहा जाता है कि खुसरो ने फारसी से कहीं अधिक हिन्दी भाषा में कविता की थी।[5] इन्होंने साज़गिरी, यमन, सरपरदा शहाना आदि रागों का आविष्कार किया। इसके अतिरिक्त कव्वाली गज़ल, चतुरंग तिरवट, तराना आदि गायन शैलियों का नवीन रूप देकर समाज में उच्च स्थान दिलवाया। इनकी गज़ल, कव्वाली से लोग उत्सव मनाते हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना 'छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलाय के' बहुत मशहूर हुई। जिसे आज भी अनेक मशहूर कलाकारों ने इसे अपने–अपने ढंग से बखूबी गाया है। इसके शब्द और स्वर का चयन दोनों मिलकर एक मधुर वातावरण के द्वारा श्रोता को झूमने पर मजबूर कर देते हैं।

संगीत और साहित्य दोनों ही लय और ध्वनि पर आश्रित हैं। वैदिक काल से लेकर आज तक मानव स्वर और शब्दों के समायोजन से उल्हादित करता आया है। तभी से निरन्तर विभिन्न युगों में पल्लवित होती हुई यह दोनों कलाएं आजकल विकसित हो रही हैं। संगीत और साहित्य का दिव्य दर्शन हमें सूर, तुलसी, कबीर, मीरा के पदों में देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त स्वामी हरिदास जी जो संगीत के महान आचार्य थे तथा गायन वादन नृत्य तीनों कलाओं में पारंगत थे। इन भक्त संतों ने अपने–अपने क्षेत्रीय भाषा एवं स्वरों के माध्यम से, संपूर्ण जगत को धर्म और सत्य का संदेश देकर भाव विभूषित कर अलंकृत किया है। इनकी रचनाएं पूर्णतया संगीतमय हैं जिसमें शास्त्रीय संगीत के राग–रागिनियों तथा लोकगीतों की धुनों का अद्भुत समिश्रण हुआ है। संगीत और साहित्य का सुन्दर रूप एक भोजपुरी गीत के माध्यम से एक विरहिणी स्त्री की मनोव्यथा का कारूणित अभिव्यंजन हुआ है जो इस प्रकार है –

बादल चमके बिजुली चमके, जियरा लरजे मोर सखिया।
सइया धरे ना अइले पानी बरसन लागेला मोर सखिया।।
सब सखियन मिल धूम मचायो मोर सखिया।
हम बैठी मन मारी रंगमहल में मोर सखिया।[6]

सावन का महीना है आकाश में काले–काले बादल गरज रहे हैं। बिजली चमक रही है, सखियां आनन्दपूर्ण कोलाहल कर रही हैं परन्तु विरहिणी नायिका अपने गृह में उदास बैठी है। प्रस्तुत गीत की रचना का चित्र रूप वर्णन करूणा के भावों की अभिव्यंजना कर रहा है जब इस रचना में स्वरों का समावेश होगा तब इसका रसात्मक रूप हमारे समक्ष होगा। संगीत और साहित्य के संयोग से ही रसानुभूति कलाकार से श्रोताओं तक अपनी भावनाओं को पहुँचाने का माध्यम है। इसी श्रृंखला में सूरदास का यह पद

निस दिन बरस नैन हमारे
सदा रहत पावस रितु हम पर जब से
श्याम सिधारे

इस पद के शब्दों का चयन विरह की ओर दर्शाता है। ह्रदय की गहराइयों को छूता हुआ यह पद करूण रस के राग में ही बांधा जाए तभी राग में लगने वाले स्वर और शब्द दोनों में संयोग से इसके भाव श्रोता तक पहुँच सकते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

1. संगीत एवं साहित्य का महत्व।
2. दोनों के संयोग से श्रोताओं तक अपने भावों का व्यक्त करना।
3. संगीत और सहित्य द्वारा रागों में, लोक संगीत में, भजन आदि में नया आयाम देना।

शोध प्रविधि

पुस्तकों एवं ग्रंथो का पठन, वार्त्ता द्वारा, शोध पत्रों का अध्ययन।

निष्कर्ष

संगीत एक ऐसी कला है जो मनोरंजन के साथ–साथ ज्ञानवर्धन भी कराती है। संगीत मानव मन को शान्ति व सुकून प्रदान करता है। साथ ही हमारे अंतःकरण की भावनाओं को दर्शाता है जिससे हमारी सोच भी विकसित होती है। संगीत के साथ साहित्य का भी बहुत महत्व है क्योंकि स्वर के साथ शब्दों का होना नितान्त आवश्यक है। संगीत और साहित्य दोनों एक धागे में पिरोये हुए अनमोल मोती के समान महत्वपूर्ण कलायें हैं जिसके माध्यम से अपने मनोभावों को अन्य लोगों के साथ कलाकार साझा कर सकता है बिना स्वर के संगीत नहीं एवं बिना शब्द के साहित्य नहीं, दोनों ही जनमानस को उत्साहित करने की सृष्टि करने में सक्षम हैं। प्राचीनकाल से आधुनिक तक के समय में संगीत और साहित्य में बहुत से परिवर्तन आते रहे। वेदों में सामवेद को संगीतमय माना गया है। उस समय का गायन पूर्णतः आध्यात्मिक था। इस समय का साहित्य भी यज्ञ आदि में मंत्रों द्वारा किया जाता है। उसके पश्चात् मध्यकाल संगीत का समृद्धशाली काल माना जाता है। इसका आरम्भ मुगलकाल से हुआ। इस काल में एक ओर भजन, कीर्तन, तो दूसरी ओर मुसलमान संगीतज्ञों द्वारा ख्याल और कव्वालियों का गायन किया गया। इस समय के महान संगीतज्ञों के नाम उल्लेखनीय हैं जैसे सूरदास, तुलसी, कबीर, मीरा, मानसिंह तोमर, अमीर खुसरो आदि। जयदेव ने भी अपनी पदावलियों को भी विभिन्न रागों में निबद्ध किया है। उनकी इस विरासत को सुरक्षित रखना हमारा परम कर्तव्य है, आधुनिक काल में महान संगीतकारों ने सुन्दर बंदिशो को बनाकर विभिन्न रागों में पिरोया है जिनका ज्ञान आज विद्यार्थी उनके द्वारा लिखी पुस्तकों से ग्रहण कर रहे हैं। पं0 विष्णु नारायण भातखंडे जी द्वारा रचित क्रमिक पुस्तक मालिका जो कई भागों में विभक्त है। आधुनिक काल में संगीत में साहित्य को जोड़कर नये–नये आयामों से विभूषित किया गया। नित रोज नये शोध हो रहे हैं। दोनों ही कलाओं की सांसों में लय विद्यमान है। विभिन्न अवयवों से मिलकर संगीत में रागों का निर्माण कर सकते हैं। फिर यह कलाकार की प्रस्तुति पर निर्भर करता है कि वह कोई भी राग गाकर श्रोता को कैसे मंत्र–मुग्ध कर सकता है। साहित्य के द्वारा ही हम संगीत में सभी तरह के भावों को अभिव्यक्त कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *प्राचीन भारत में संगीत – डॉ0 पूनम मिश्रा – पृष्ठ 4*
2. *नीति शतक – राजा श्री भृर्तहरि कृत – पृष्ठ 31*
3. *चिंतामणि – रामचन्द्र शुक्ल – पृष्ठ 179*
4. *संगीत निबन्ध संग्रह – प्रो0 हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव – पृष्ठ 58*
5. *हिन्दी साहित्य का इतिहास – एल0एम0 पाण्डे – पृष्ठ 60*
6. *भोजपुरी लोक संगीत – कृष्णदेव उपाध्याय – पृष्ठ 424*